

जागरण की एक नई रीति

भारतीय परम्परा में सभी अपनी तरफ से पूरा प्रयास करते हैं कि उसे निभाया जाए। लोग उसे निभाते भी हैं, फिर भी निभाना कब तक चलेगा? कभी न कभी इस परम्परा में छुपे रहस्य के साथ हम जुड़ेंगे ही। क्योंकि सभी त्योहारों के साथ करते सबकुछ हैं, लेकिन बस करने के ध्येय से, कि करना ज़रूरी है, इसलिए कर लिया जाए। लेकिन उसके मूल में जो रहस्य छिपा है, सभी उससे अनभिज्ञ हैं। तो आज नवरात्रि के साथ-साथ स्व-जागृति के आधार से विकारों पर विजय कैसे प्राप्त करें, उस रहस्य को समझते हैं...

दुनिया में कुछ भी नया करने के लिए एक नए मुहूर्त का इंतज़ार सभी को होता है, इसलिए किसी न किसी मास में शुभ कार्य करने के लिए मनुष्य इन दिनों को चुनता है। उसमें से खासकर शुभ कार्य हेतु नवरात्रि का समय अति विशेष माना जाता है। भारतीय परम्परा में ये मान्यता है, कि इस समय जो कार्य सच्चे मन से किये जाएं, वे फलीभूत अवश्य होते हैं। इसलिए ज़्यादातर लोग पूरे साल इस घड़ी का इंतज़ार करते हैं, कि यह कार्य सिर्फ और सिर्फ इसी मास के अंदर हमें करना है।

अब हम आपको ये नहीं बता रहे, कि ये चैत्र की नवरात्रि है या कोई और नवरात्रि, हम तो सिर्फ आपको उन मापदंडों पर लेकर चलते हैं, जिनके बारे में सोचना अति आवश्यक है। आप नवरात्रि का समय याद करिये। उस समय कितना विधि विधान से मनुष्य अपने आपको सजाता है। कहने का भाव है कि उस समय मनुष्य पवित्रता का व्रत धारण करता है, घर में शुद्धि का ध्यान रखता है, मांसाहारी भोजन और व्यसनों का त्याग कर

ब्रह्मचर्य व्रत का पूर्ण रूप से पालन करने का प्रयत्न करता है। कारण इसके पीछे क्या हो सकता है? क्या सिर्फ नौ दिन इन परहेजों को करने से हमारी ज़िन्दगी सुधर सकती है, या इच्छित फल हमेशा हमको मिल सकता है? हम यह नहीं कह रहे कि आपको मिलता नहीं होगा, ज़रूर मिलता होगा, लेकिन कब तक चलेगा वो, फिर चाहिए तो! लेकिन इस बात पर विचार करने का या तो हमारे पास समय नहीं है, या हम करना नहीं चाहते।



कहते हैं, नवरात्रि में रात के समय जागरण करके नौ दिन तक उस देवी के भाव में रहते हैं, ताकि देवी की कृपा हमारे ऊपर हो जाये। लेकिन नौ रात तक जगराता करने के बाद क्या सच में देवी मिल जाती है, या उसकी कृपा हम पर बरसती है? अब इसका आध्यात्मिक रहस्य तो यही कहता है कि दिन में हमें समय कम मिलता है, दैनिक कार्य, कार्यालय, घर आदि को देखने में समय चला जाता है। रात का समय हमारा अपना होता है। उस समय हम एकाग्र होकर ध्यान में अगर बैठ सकते हैं, तो उस समय हमारा मन अच्छी तरह से लग सकता है, इसलिए नौ दिन को एक आदर्श अंक मानकर लोग निरंतर अखंड

रूप से ध्यान करने की कोशिश करते हैं। इससे अल्पकाल की प्राप्ति भी होती है। इसका मिसाल शास्त्रों में भी है। जिसमें कहा जाता है कि राम ने जब रावण पर विजय प्राप्त की, उससे पहले नौ दिन देवी की उपासना की। उपासना पूरी होने के बाद देवी ने प्रसन्न होकर उनको एक तीर प्रदान किया जिससे उन्होंने रावण का वद किया। अब यहाँ पर तीर अगर राम चलाते हैं, तो राम तो हिंसक हो गये। तो यहाँ पर बात ये है कि यदि हम अपने आपको उस परमात्मा के ज्ञान बाण से रावण रूपी मनुष्यों का अहंकार नष्ट कर दें जड़ से, तो जीत जायेंगे। तो इसीलिए दशहरा का अर्थ है कि काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि दस विकारों को हराने वाला। लेकिन इतने वर्षों से रावण का वद लगातार हो रहा है, लेकिन उसके सिर वैसे के वैसे हर बार जुड़ जाते हैं। तो यदि हम सच में नवरात्रि तथा दशहरा मनाना चाहते हैं तो हमें नव चेतना को जगाना होगा। नव चेतना अर्थात् बुद्धि की जागरूकता से जगराता करना है। इसका मतलब हर समय अपने आप को ज़िन्दा रखना, अवेयर रखना कि कोई भी माया, कोई भी इधर उधर की बातें हमारी चेतना को ढक ना लें। अगर हम खुद को आत्मिक स्थिति में रखकर ऐसे नौ दिन भी लगातार करें, तो सच में कुछ हद तक हम खुद को आत्मिक रूप में एकाग्र कर पायेंगे और रावण को भी हराकर दशहरा का सम्पूर्ण अर्थ प्राप्त कर लेंगे। आज हर आत्माराम के साथ रावण का संघर्ष है, इसलिए हर आत्माराम को उन दसों इंद्रियों को जीतकर विजयादशमी मनानी चाहिए। अब ये विजय पताका तब फहरेगी जब सभी एक साथ जाग करके एकतरफा प्रयास करें और इसमें विजय प्राप्त करके अवश्य दिखायें।

आपका जीवन... - पेज 2 का शेष

बेटे की बात पूरी हुई, तो पिता आश्चर्यचकित हो गया! बेटे ने बात समेटते हुए कहा: 'पापा, आपका बहुत आभार। हम इतने गरीब हैं, ये दिखाने के लिए।'

देखो, इस लड़के को जीवन को रंगीन बनाना या संगीन बनाना, ये बात क्या उसे सिखानी पड़ेगी? इसीलिए जीवन में विवेक दृष्टि हो तो क्या त्यागना और क्या ग्रहण करना, उसकी सूझबूझ अपने आप ही आ जाती है। जो मनुष्य जीवन में संगीनता और रंगीनता का समन्वय बना सके, उस मनुष्य को ज़िन्दगी व्यर्थ जाने का मन में कोई दुःख नहीं रहेगा।

भर्तृहरि ने भोगों की मर्यादा के बारे में उचित लिखा है कि हम भोग को भोगते नहीं हैं, बल्कि भोग हमें भोगता है। तो हम ऐसी शुभ भावना रखें, 'परमात्मा, हमें ऐसी दृष्टि दे कि हम सरल और कठिन के बीच का भेद परख सकें, हमें ऐसी शक्ति दे कि हम कठिन से कठिन रास्ते पर चल सकें।'

जीवन को संगीन और रंगीन बनाने के लिए ध्यान देने योग्य बिन्दु:-

1. जीवन में सिर्फ खुशी को खोजने के बजाय प्रसन्नता प्राप्ति का लक्ष्य बनाइए। चिंता-मुक्त जीवन दृष्टि विकसित करें।
2. उतावलापन और निरर्थक विचार, रंगीनता के चस्के मनुष्य को बर्बाद कर

सकते हैं। इसलिए 'अति' रंगीनता के परवान न चढ़ें। रंगीनता और संगीनता दोनों के चाहक बनें।

3. जीवन को संगीन बनाने के लिए उलझनों और कठिनाइयों को विषय न बनायें। कार्य हल्केपन से करें और आनंद के क्षणों की भी उपेक्षा न करें।

4. रंगीनता और संगीनता का समन्वय साधने के लिए जीवन प्रति दृष्टिकोण को उदात्त बनाइयें।

5. आसक्ति मनुष्य को विवेकहीन बनाती है, इसलिए जीवन में रंगीनता को मर्यादापूर्वक उचित और आवश्यक समय दें।



राँची-झारखण्ड। माननीय मुख्यमंत्री रघुवर दास को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. निर्मला।



मोतिहारी-बिहार। पर्यटन राज्य मंत्री प्रमोद कुमार को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. विभा। साथ हैं ब्र.कु. डेगी।



दिल्ली-आर.के. पुरम। बी.आई.एस. भवन आई.टी.ओ. में चीफ विजिलेंस ऑफिसर आनंद मोहन तथा उनकी धर्मपत्नी को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. अनीता।



मिरजापुर-उ.प्र.। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के रक्षाबंधन कार्यक्रम में उपस्थित हैं संघ के राष्ट्रीय बौद्धिक प्रमुख स्वान्त रंजन, राजयोगिनी ब्र.कु. बिन्दु तथा अन्य।



शांतिवन-आबू रोड। सिरोंही जालोर जिले में बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों के लोगों को चिकित्सा सुविधा तथा अन्य आवश्यक सामग्री उपलब्ध कराने हेतु ब्रह्माकुमारी. ज के ग्लोबल हॉस्पिटल की ओर से तीन एम्बुलेंस तथा चिकित्सकों की टीम को रवाना करते हुए ब्रह्माकुमारीज के सूचना निदेशक ब्र.कु. करुणा, मेडिकल प्रभाग के सचिव डॉ. बनारसी, शांतिवन के अभियंता ब्र.कु. भरत, ब्र.कु. भानु तथा अन्य।



फतेहपुर-शेखावटी(राज.)। सेवाकेन्द्र पर ब्र.कु. भाई बहनों को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सुनीता तथा ब्र.कु. मंजू।



ब्रह्मपुर-ओडिशा। टी.आउ.आई.ए.एस.,आर.डी.सी. को रक्षासूत्र बांधते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. मंजू।



मैनपुरी-उ.प्र.। जिला कारागार प्रभारी जेलर कुलदीप सिंह भदौरिया को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. अबन्ती।



दिल्ली-महौली। थाना में ए.सी.पी. जिमी चिरम,आई.पी.एस. को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. अनीता।